पढ़ने की आदत को प्रोत्साहित करने में पुस्तकालयों की भूमिका

राकेश रौथान

हमारा स्कूल 2012 में उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर के दिनेशपुर इलाके में शुरू हुआ। स्कूल में बारह शिक्षक और लगभग अस्सी विद्यार्थी थे। शुरुआत में हमारे स्कूल में सीमित संसाधन थे और हमने उन्हीं का उपयोग करके अच्छे से अच्छा कार्य करने की कोशिश की। उदाहरण के लिए हमने बच्चों के पढ़ने के लिए उत्तराखण्ड राज्य की पहली से पाँचवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों तथा एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों का प्रयोग किया।

फिर हमने सोचा कि हमारे स्कूल में पाठ्यपुस्तकों के अलावा कहानी की किताबें भी होनी चाहिए और तब हमने विद्यार्थियों के लिए कहानी की नई किताबें खरीदने का फैसला किया। ज़िला संस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष ने प्रारम्भिक शिक्षार्थियों के लिए किताबें चुनने में हमारी मदद की। हमने अपने विद्यार्थियों के लिए पुस्तक मेलों से भी पुस्तकें खरीदीं।

हमारे पिछले स्कूल भवन में एक बड़ा हॉल था जिसका उपयोग हम पुस्तकें बाँटने के लिए करते थे क्योंकि किराए के उस भवन में पुस्तकालय के लिए अलग से कोई कमरा नहीं था। यह हॉल आम पुस्तकालयों जैसा नहीं था क्योंकि इसमें शेल्फ, कुर्सी-मेज़ और पढ़ने के कोने नहीं थे, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हमने अपने विद्यार्थियों को पढ़ने के अवसर नहीं दिए। हमने उनके पढ़ने के लिए आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की। पुस्तकालय के कामकाज के लिए हमने कोई विशिष्ट योजना नहीं बनाई थी। शुरू से ही विद्यार्थियों को अपनी पसन्दीदा किताबों का चयन करने की छूट दी गई थी, भले ही वे किताबें उनके कक्षा के स्तर की न हों। उन्हें अन्य लोगों द्वारा चुनी हुई किताबें पढ़ने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है - उन्हें किताबों को चुनने की पूरी स्वतंत्रता दी गई है। उस समय 65 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों ने किताबें पढ़ीं और ये किताबें घर ले जाकर पढ़ने के लिए भी दी जाती थीं। हालाँकि हम निश्चित रूप से यह तो नहीं कह सकते कि उनमें से कितनों ने गम्भीरता के साथ किताबें पढ़ी होंगी, लेकिन उन्होंने इन किताबों को देखा ज़रूर होगा और पन्ने भी पलटे होंगे क्योंकि वे कहानियों को अपने शब्दों में सुना पा रहे थे।

प्रक्रिया

हम किताबों को ज़मीन पर एक कतार में रखते हैं ताकि सभी विद्यार्थी उन्हें देख सकें। स्कूल ख़त्म होने के बाद विद्यार्थी आकर इन किताबों को देखते हैं। वे किताब हाथ में लेते हैं, पन्ने पलटते हैं, दूसरी किताबें देखते हैं और अन्त में अपनी पसन्द की किताब चुनते हैं। अपनी कक्षा के लिए नियत नोटबुक में वे खुद अपनी चुनी हुई किताबों का विवरण लिखते हैं और अपने द्वारा ली गई किताबों के रिकॉर्ड के रखरखाव की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं की है। शिक्षक उनका मार्गदर्शन और सहायता करते हैं। इस प्रक्रिया में सभी शिक्षक शामिल होते हैं। हम एक मेज़ पर समाचार पत्र भी रखते हैं ताकि दोपहर के भोजन के समय विद्यार्थी सामूहिक रूप से उसे पढ़ें और अपनी रुचि के अनुसार समाचारों पर चर्चा कर सकें। हमारे पास प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए कहानी की करीब 400 किताबें हैं। जिन विद्यार्थियों को यह प्रक्रिया मुश्किल लगती है वे शिक्षकों या बड़े विद्यार्थियों की मदद ले सकते हैं। पुस्तकालय चलाने की इस प्रक्रिया में सभी शिक्षक शामिल हैं।

इसके अलावा हम विद्यार्थियों से किताबों के उपयोग, देखभाल और उन्हें अच्छी हालत में रखने के बारे में भी बात करते हैं। शुरू में हम शिक्षक ही किताबों के फटे हुए पन्नों को सिलने और चिपकाने का काम करते थे लेकिन बाद में विद्यार्थियों ने शिक्षकों की मदद से यह काम करना शुरू कर दिया। हमने 'किताबों के अस्पताल' की संकल्पना भी शुरू की है। जिन किताबों के पन्ने फट गए हैं और जिन पर जिल्द चढ़ाने की ज़रूरत है या जिन्हें सिलना है - ऐसी सारी किताबों को एक बक्से में रख दिया जाता है ताकि उनकी मरम्मत की जा सके। यह बक्सा किताबों के समीप ही रखा गया है। सत्र के समाप्त होने से पहले हम किताबों के रिकॉर्ड भी देखते हैं जिससे हमें यह पता चल सके कि ऐसी कितनी किताबें हैं जो अच्छी हालत में हैं तथा जिनका उपयोग किया जा सकता है और कितनों की मरम्मत की जानी है ताकि अगले सत्र में उनका उपयोग हो सके। इसके आधार पर हम पुस्तकालय के लिए नई किताबें खरीदने का निर्णय लेते हैं।

अवलोकन

शिक्षक होने के नाते हम न केवल पुस्तक पढ़ने के महत्त्व को समझते हैं बल्कि उनकी समीक्षा की अहमियत भी जानते हैं। इसलिए हमने कहानी की किताबें पढ़ने और जो पढ़ा है उस पर चर्चा करने का दैनिक अभ्यास भी शुरू किया है। यह हमारे आत्मविकास की प्रक्रिया का हिस्सा भी है। आम तौर पर

हम ऐसा अपने अँग्रेज़ी बोलने के सुधार के लिए करते हैं और इससे हमें बहुत लाभ भी हुआ है। इससे हमें लोगों के सामने एक व्यवस्थित तरीक़े से अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

2015 में जुलाई के महीने में हम अपने स्कूल के स्थायी भवन में चले गए। यह भवन बड़ा है और यहाँ बुनियादी ढाँचा भी बहुत अच्छा है। इस नए परिसर में बहुत सारी सुविधाएँ हैं और पुस्तकालय के लिए एक अलग और बड़ा-सा कमरा भी है। हमारे पुस्तकालय में किताबों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। ज़िला संस्थान के पुस्तकालयाध्यक्ष स्कूल के पुस्तकालय के लिए किताबें चुनने और उन्हें प्राप्त करने में हमारी मदद करते हैं।

संसाधनों के बढ़ने और पुस्तकों की उपलब्धता से विद्यार्थियों को अपना काम करने में आसानी हुई है। अब पुस्तकालय में विद्यार्थियों की आयु और स्तर की कई किताबें उपलब्ध हैं। हमने कोशिश की है कि विषय सम्बन्धी अध्ययन सामग्री भी पुस्तकालय में रखी जाए ताकि विद्यार्थी उनका उपयोग अपने विषयों के सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में कर सकें।

कुछ समस्याएँ भी सामने आईं। हमने देखा कि जब विद्यार्थियों ने नए पुस्तकालय का उपयोग करना शुरू किया तो उसके कुछ महीनों बाद पुस्तकालय का कार्य सुचारू रूप से नहीं चल रहा था। शेल्फ पर किताबें अव्यवस्थित रूप से रखी गई थीं। किताबों का रिकॉर्ड बनाए रखना मुश्किल हो रहा था। किताबों के खोने और फटने की संख्या बढ़ रही थी। अब हमारे स्कूल में पहली से दसवीं तक की कक्षाएँ हैं। तो हमें लगा कि अलग-अलग आयु वर्ग के विद्यार्थियों की रुचियाँ और पसन्द भी अलग होती हैं। अतः किताबों को चुनते समय हमें इस बात का ध्यान भी रखना चाहिए।

नए पुस्तकालय में हम किताबों को विषयानुसार व्यवस्थित करते हैं ताकि विद्यार्थियों को अपनी ज़रूरत के हिसाब से किताबें खोजने में आसानी हो। हिन्दी कहानियों, अँग्रेज़ी कहानियों, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि की किताबों, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के लिए अलग-अलग शेल्फ हैं। किताबें लेते समय तो विद्यार्थी सही शेल्फ से किताब ले लेते हैं लेकिन पीरियड समाप्त होने के बाद वे उन्हें अन्य किसी भी शेल्फ में रख देते हैं। जब अगली कक्षा पुस्तकालय में आती है तो उन्हें अपनी ज़रूरत की किताबें ढूँढ़ने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ता है क्योंकि ये किताबें सही स्थानों में नहीं रखी होती हैं।

अब हमारे स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या बढ़कर 350 हो गई है, पहली से दसवीं तक कक्षाएँ हैं और पन्द्रह शिक्षक हैं। पुस्तकालय में किताबों की संख्या भी बढ़ गई है। शिक्षकों को अपने विषय सम्बन्धी कक्षा प्रक्रियाओं और कार्यों में अधिकाधिक समय देना होता है। इसलिए पुस्तकालय के कामों में वे अधिक सहयोग नहीं दे पाते। सक्रिय और नियमित पाठकों की संख्या आनुपातिक रूप से नहीं बढ़ी है और जो विद्यार्थी किताबों में रुचि दिखाते भी हैं वे भी छोटी कहानियों की किताब पहले चुनते हैं। बहुत कम विद्यार्थी ऐसे हैं जो सन्दर्भ पुस्तकें और गम्भीर पठन सामग्री का चयन करते हैं।

लेकिन चूँकि हम यह जानते हैं कि विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत का विकास करने में पुस्तकालय कितने महत्त्वपूर्ण हैं, इसलिए हमने तय किया है कि हम अपनी कक्षाओं में रोज़ एक पीरियड पुस्तकालय के लिए रखें। विद्यार्थियों को रोज़ किताबें पढ़ने का मौका मिलता है। अँग्रेज़ी और हिन्दी की किताबों को विद्यार्थियों की कक्षा और आयु के हिसाब से छाँटकर एक महीने तक उनकी कक्षाओं में रखा जाता है ताकि विद्यार्थी प्रतिदिन विभिन्न किताबें पढ़ सकें। यह तो स्वाभाविक है कि बार-बार उन्हीं किताबों को पढ़ने से विद्यार्थी ऊब जाएँगे। इसलिए यह तय किया गया कि निश्चित अवधि के बाद उन किताबों की जगह दूसरी किताबें रखी जाएँ।

हमने यह कोशिश भी की है कि किताबों को प्राथमिक कक्षा स्तर, उच्च प्राथमिक कक्षा स्तर, हाई स्कूल स्तर, हिन्दी कहानियों, अँग्रेज़ी कहानियों आदि के आधार पर अलग-अलग शेल्फों में रखा जाए। विषयों के बीच अन्तर करने के लिए काग़ज़ की रंगीन पर्चियाँ लगाई जाती हैं। प्राथमिक कक्षा स्तर की किताबों को निचली शेल्फ, उच्च प्राथमिक कक्षा स्तर की किताबों को बीच वाली शेल्फ और हाई स्कूल स्तर की किताबों को सबसे ऊपरी शेल्फ में रखा जाता है। यह प्रणाली कुछ समय तक तो अच्छी तरह से काम करती है लेकिन बाद में किताबें फिर इधर-उधर हो जाती हैं।

योजना

एक बार पढ़ने की प्रक्रिया ठीक से जम जाए तो हमने कुछ और गतिविधियाँ शुरू करने का निर्णय लिया है जैसे कहानियाँ साझा करना, कहानियाँ पढ़कर सुनाना और उन पर चर्चा करना आदि ताकि विद्यार्थी विचारों को अभिव्यक्त करने और विचारों को शब्दों में व्यक्त कर पाने में सक्षम हो सकें।

- हमने एक पुस्तकालय समिति भी बनाई है जो पुस्तकालय के सुधार से सम्बन्धित बातों पर चर्चा करती है और इससे विद्यार्थियों के पढ़ने की क्षमता में सुधार लाने में मदद मिलेगी। हर साल कुछ शिक्षक पुस्तकालय की ज़िम्मेदारी सम्भालते हैं।

- हम एक ऐसी व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश करते हैं जिससे प्रत्येक विद्यार्थी आसानी से पुस्तकालय में जा सके और उसे अपनी ज़रूरतों व रुचि के अनुसार किताबें खोजने का मौक़ा मिले।
- विभिन्न गतिविधियों के लिए एटलस और शब्दकोशों का उपयोग करने से विद्यार्थियों का शब्द भण्डार बढ़ता है जिससे प्रवाह के साथ पढ़ने में भी सहायता मिलती है।
- साझा करने और चर्चा करने से न केवल वह विद्यार्थी प्रेरित होता है जो किताबों को सही तरीक़े से पढ़ता है बल्कि दूसरे विद्यार्थी भी कक्षा के सामने प्रस्तुतिकरण के लिए प्रेरित होते हैं।
- यदि विद्यार्थियों का किताबों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध हो तो वे अपनी ख़ुद की कहानियाँ व रोल प्ले के आलेख लिख सकते हैं और प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों के एक बड़े समूह के सामने धाराप्रवाह तरीक़े से पढ़ सकते हैं।
- हम पुस्तकालय के सभी पहलुओं में विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करना चाहते हैं।

इस तरह से हमने यह कोशिश की है कि विद्यार्थियों में पुस्तकालय की किताबों और अन्य उपलब्ध साधनों के प्रति ज़िम्मेदारी विकसित हो और वे किताबों से प्रेम करना सीखें।

राकेश रौथान उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर में स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल में स्कूल की शुरुआत से ही सामाजिक विज्ञान के शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने एम.एड. और एम.ए. (भूगोल) की डिग्री प्राप्त की है। अज़ीम प्रेमजी स्कूल से पहले वे ईडन मोंटेसरी स्कूल, चमोली, गढ़वाल और सेंट थेरेसा कॉन्वेंट स्कूल, श्रीनगर, गढ़वाल में कार्यरत थे। उनसे rakesh.rauthan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।